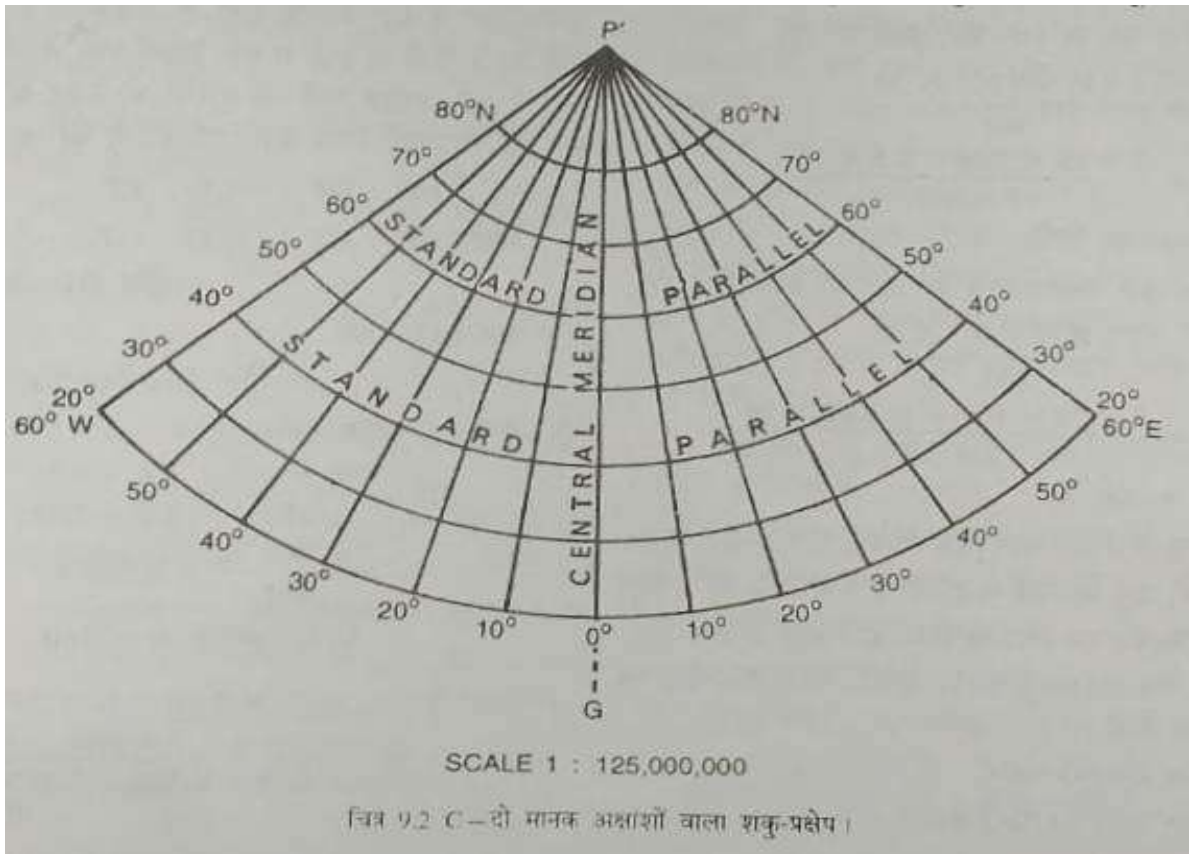


दो मानक अक्षांश वाला शंकु प्रक्षेप (Conical Projection with two Standard Parallel)

बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक भूगोल,
राजा सिंह कॉलेज सिवान

यह प्रक्षेप एक मानक अक्षांश वाले साधारण शंकु प्रक्षेप का संशोधित रूप है। इस प्रक्षेप की रचना इस कल्पना पर आधारित है कि कागज का शंकु ग्लोब में प्रवेश करके ग्लोब की सतह को दो अक्षांश वृत्त के सहारे स्पर्श करता है। इन दोनों अक्षांश वृत्तों को मानक अक्षांश मान लिया जाता है। यहां यह समझ लेना आवश्यक है कि व्यवहार में कागज के शंकु को ग्लोब में प्रवेश कराना अथवा उसे ग्लोब के दो अक्षांश वृत्त पर एक साथ स्पर्श कराना संभव नहीं है। दो मानक अक्षांश वाले शंकु प्रक्षेप को कभी-कभी छेदक शांकव प्रक्षेप (Secant Conic Projection) नाम से पुकारा जाता है। परंतु ऐसा कहना त्रुटि पूर्ण है क्योंकि छेदक शांकव प्रक्षेप में दोनों मानक अक्षांशों के बीच की दूरी, उनके बीच की छेदक दूरी के समान रखते हैं जबकि दो मानक अक्षांश के शंकु प्रक्षेप में चापीय दूरी प्रयोग की जाती है जिससे प्रक्षेप में अक्षांश वृत्तों को उसी अनुपातिक दूरी के अंतर पर बनाया जा सके जिसपर कि वे ग्लोब पर होते हैं। याद रहे कि किसी वृत्त की परिधि को दो बिंदुओं पर काटने वाली सरल रेखा को वृत्त की छेदक कहते हैं। प्रक्षेप बनाते समय उन अक्षांश वृत्तों को मानक अक्षांश चुनना चाहिए जिनके मध्य दिए गए क्षेत्र का लगभग 2/3 भाग स्थित हो।



चित्र स्रोत: प्रायोगिक भूगोल, रस्तोगी प्रकाशन, जे० पी० शर्मा

पहचान (Identification)

इस प्रक्षेप को निम्नलिखित लक्षणों के आधार पर पहचानते हैं:

1. समस्त अक्षांश वृत्त संकेन्द्र वृत्तों के समान दूरी के अंतर पर खींचे गए चाप होते हैं ।
2. सभी देशांतर रेखाएं शंकु के शीर्ष से खींची गई सरल रेखाओं के रूप में होती हैं ।
3. प्रक्षेप में ध्रुव एक चाप द्वारा प्रकट होता है ।
4. अक्षांश वृत्त तथा देशांतर रेखाएं एक दूसरे को समकोण पर काटते हैं ।
5. प्रत्येक अक्षांश वृत्त पर देशांतर रेखाओं के बीच की दूरी एक समान होती है ।

गुणधर्म (Properties)

दो मानक अक्षांश वाले शंकु प्रक्षेप में निम्नांकित गुणधर्म मिलते हैं:

1. दोनों मानक अक्षांशों पर मापनी शुद्ध होती है परंतु अन्य वृत्तों पर मापनी शुद्ध नहीं रहती ।
2. समस्त देशांतर रेखाओं पर मापनी शुद्ध होती है ।
3. चूँकि केवल मानक अक्षांशों और देशांतर रेखाओं पर ही मापनी शुद्ध रहती है । अतः यह प्रक्षेप न तो यथाकृतिक है और न ही समक्षेत्र है ।
4. चूँकि इस प्रक्षेप में दो मानक अक्षांश होते हैं अतः यह एक मानक अक्षांश वाले साधारण शंकु प्रक्षेप की तुलना में अधिक शुद्ध है ।
5. इस प्रक्षेप पर समस्त संसार का मानचित्र नहीं बनाया जा सकता है ।
6. चूँकि इस प्रक्षेप में ध्रुव एक चाप के रूप में प्रकट होता है, अतः ध्रुवीय क्षेत्रों के मानचित्र बनाने के लिए यह प्रक्षेप उपयुक्त नहीं होता ।

उपयोग (Use)

इस प्रक्षेप पर बने मानचित्र में मानक अक्षांशों से दूरी बढ़ने के साथ-साथ क्षेत्रों की आकृति तथा क्षेत्रफल में विकृति बढ़ने लगती है । अतः अधिक अक्षांशीय विस्तार वाले देशों के मानचित्र इस प्रक्षेप पर नहीं बनाए जाते । यूरोप तथा ऑस्ट्रेलिया की मानचित्रावलियों में अलग-अलग देशों तथा राज्यों के मानचित्र बनाने के लिए इस प्रक्षेप का बहुत उपयोग हुआ है ।

.....
सन्दर्भ: प्रायोगिक भूगोल, रस्तोगी प्रकाशन, जे० पी० शर्मा
.....